शीतला षष्ठी व्रत कथा PDF

बहुत पुराने समय की बात है। एक नगर में एक ब्राह्मण दम्पत्ति के सात पुत्र हुआ करते थे। ब्राह्मण ने अपने सात पुत्रों की शादी धूमधाम से करवाई। कुछ समय बीत जाने के बाद भी पुत्रों के कोई सन्तान उत्पन्न न हो सकी। एक दिन किसी ने एक ब्राह्मण दंपत्ति को शीतला षष्ठी व्रत करने की सलाह दी। माता-पिता की आज्ञा से पुत्र-पुत्रियों ने यह व्रत किया। शीतला षष्ठी व्रत के प्रभाव से सभी को एक वर्ष के बाद संतान की प्राप्ति होती है।

इसके बाद वह हर साल इस व्रत को करने का संकल्प लेते हैं। एक बार षष्ठी तिथि के व्रत में ब्राह्मणवादी व्रत के एक नियम की उपेक्षा की जाती है। ब्राह्मण उस दिन गर्म जल से स्नान करते हैं। व्रत की उसी रात को एक ब्राह्मण स्वप्न में देखता है कि उसके परिवार को बहुत कष्ट हो रहा है। परिवार में उत्पन्न संतान मृत्यु को प्राप्त होती है।

इस सपने के टूटने से अचानक उसकी नींद खुल जाती है। ब्राह्मण ने देखा कि उसके परिवार के सभी सदस्य मर चुके हैं, परिवार का ऐसा अंत देखकर ब्राह्मण महिला विलाप करने लगी। उसका विलाप सुनकर आसपास के लोग वहां आ जाते हैं। पड़ोसी उस महिला से कहते हैं कि यह माता शीतला का प्रकोप होगा। आपको अपने पापों के लिए माता शीतला से क्षमा याचना करनी चाहिए। यह सब बातें सुनकर उस ब्राह्मण को अपनी गलती याद आ गई। वह ब्राह्मण रोता हुआ वन की ओर चला जाता है। उस अंधेरे जंगल में, वह आग से झुलसी एक बूढ़ी औरत को देखता है।

ब्राह्मण उसके पास जाता है और उसकी हालत का कारण पूछता है। बुढ़िया उससे कहती है कि यह तुम्हारी वजह से हुआ है। व्रत के दिन आपने गर्म जल से स्नान किया और गर्म भोजन किया। इस वजह से मुझे इस दर्द का सामना करना पड़ रहा है।' यह सुनकर ब्राह्मण अपने किए पर पश्चाताप करता है और क्षमा मांगता है। अपने परिवार को जीवन देने के लिए प्रार्थना करती है। तभी

pdfinbox.com

बुढ़िया उसे बुलाती है। इस आग की जलन को शांत करने के लिए इस पर दही का लेप करें जिससे इसे शांति मिले।

फिर ब्राह्मण उस बुढ़िया के शरीर पर दही का लेप लगाता है। बुढ़िया अपने रूप में आ जाती है और शीतला माता का रूप धारण कर लेती है। माता शीतला ने ब्राह्मण को क्षमा कर दिया। उसका परिवार भी जीवित हो जाता है। पूरी श्रद्धा और भाव से शीतला माता का व्रत करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है और लंबी उम्र का आशीर्वाद मिलता है।

pdfinbox.com

pdfinbox.com